भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता में पूर्वी मेदिनीपुर के बाढ़ग्रस्त गांवों में कृषिवानिकी विकास पर परियोजना निगरानी समिति बैठक आयोजित

5 सितंबर, 2023, कोलकाता

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने आज डॉ. प्रदीप डे, निदेशक की अध्यक्षता में पूर्वी मेदिनीपुर के बाढ़ग्रस्त गांवों में कृषिवानिकी विकास पर नाबार्ड वित्त पोषित परियोजना का तीसरी निगरानी समिति की बैठक हाइब्रिड मोड में आयोजन किया।

प्रोफेसर देबब्रत बसु, विस्तार शिक्षा निदेशक, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर ने परियोजना गतिविधियों की सराहना की और उल्लेख किया कि इस तरह की होमस्टेड कृषि वानिकी विभिन्न स्तरों में विविध फसलों को शामिल करके क्षेत्र की जैव विविधता संरक्षण के साथ प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करने के लिए एक उत्कृष्ट टिकाऊ मॉडल हो सकती है।

डॉ. डे ने भूमि की स्थिति (उच्च, मध्यम, निम्न) बनाम उत्पादकता और शुद्ध रिटर्न की योजना बनाने और प्रत्येक भू-आकृति के लिए सर्वोत्तम प्रणाली की पहचान करने का सुझाव दिया। पेड़ों के कैनोपी वॉल्यूम माप पर दर्ज आंकड़ों से कार्बन पदचिह्न की गणना करने का भी सुझाव दिया गया है। उन्होंने कहा कि कृषि वानिकी की स्थापना से रोजगार सृजन, घरेलू पोषण सुरक्षा और गोद लिए गए गांवों में भावी पीढ़ियों के लिए बीमा के रूप में आर्थिक विकास के नए क्षितिज की शुरुआत होगी। उन्होंने बैठक में उपस्थित राज्य विभाग के अधिकारियों से अनुरोध किया कि इस कृषिवानिकी प्रदर्शन से प्राप्त लाभों को प्रौद्योगिकी के क्षैतिज हस्तांतरण के लिए जन जागरूकता शिविर और किसानों की यात्रा संगोष्ठी के माध्यम से परियोजना के परिणामों को प्रसारित करने में मदद की जा सकती है।

शुरुआत में, पूर्वी मेदिनीपुर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख और परियोजना के सह- प्रमुख अन्वेषक डॉ. निताई मुदी ने बताया कि तीन स्तरीय प्रणाली कृषि वानिकी मॉडल (फल पौधे + वन पौधे + सब्जियां / मसाले) कुल 300 कृषक परिवारों की सक्रिय भागीदारी के साथ विकसित किया गया है। एक प्रगतिशील किसान श्री जयदेव साव ने अपनी कृषि वानिकी इकाई के अंतरक्षेत्रीय क्षेत्र से अदरक और हल्दी की कटाई से प्राप्त आकर्षक शुद्ध लाभ पर अपना अनुभव साझा करते हुए अपनी खुशी व्यक्त की।

अटारी, कोलकाता के प्रधान वैज्ञानिक और परियोजना के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अविजित हलदर ने कृषिवानिकी प्रदर्शन भूखंडों से एकत्र किए गए मिट्टी के नमूनों पर मिट्टी की उर्वरता का आकलन पूरा करने की राय दी। श्री पिंकू दास, जिला उप प्रबंधक, नाबार्ड, पूर्वी मेदिनीपुर ने परियोजना के तहत किसानों को क्रिसन क्रेडिट कार्ड (केसीसी) से जोड़ने की सलाह दी। श्री. राज्य बागवानी विभाग, पूर्वी मेदिनीपुर के उप निदेशक दीपक सारंगी ने यदि संभव हो तो तेज पत्ता, करी पत्ता जैसे किसी भी उपयुक्त पेरिनियल मसाले के पौधे लगाने का सुझाव दिया। डॉ. पी.पी. पाल, डॉ. एस. मंडल और डॉ. के.एस. दास, अटारी-कोलकाता के प्रधान वैज्ञानिकों ने अपने विचार साझा किए और अब तक की प्रगति हासिल करने के लिए परियोजना टीम की सराहना की। बैठक डॉ. सयान साव, एसएमएस, बागवानी एवं परियोजना के सह- प्रमुख अन्वेषक के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुई।